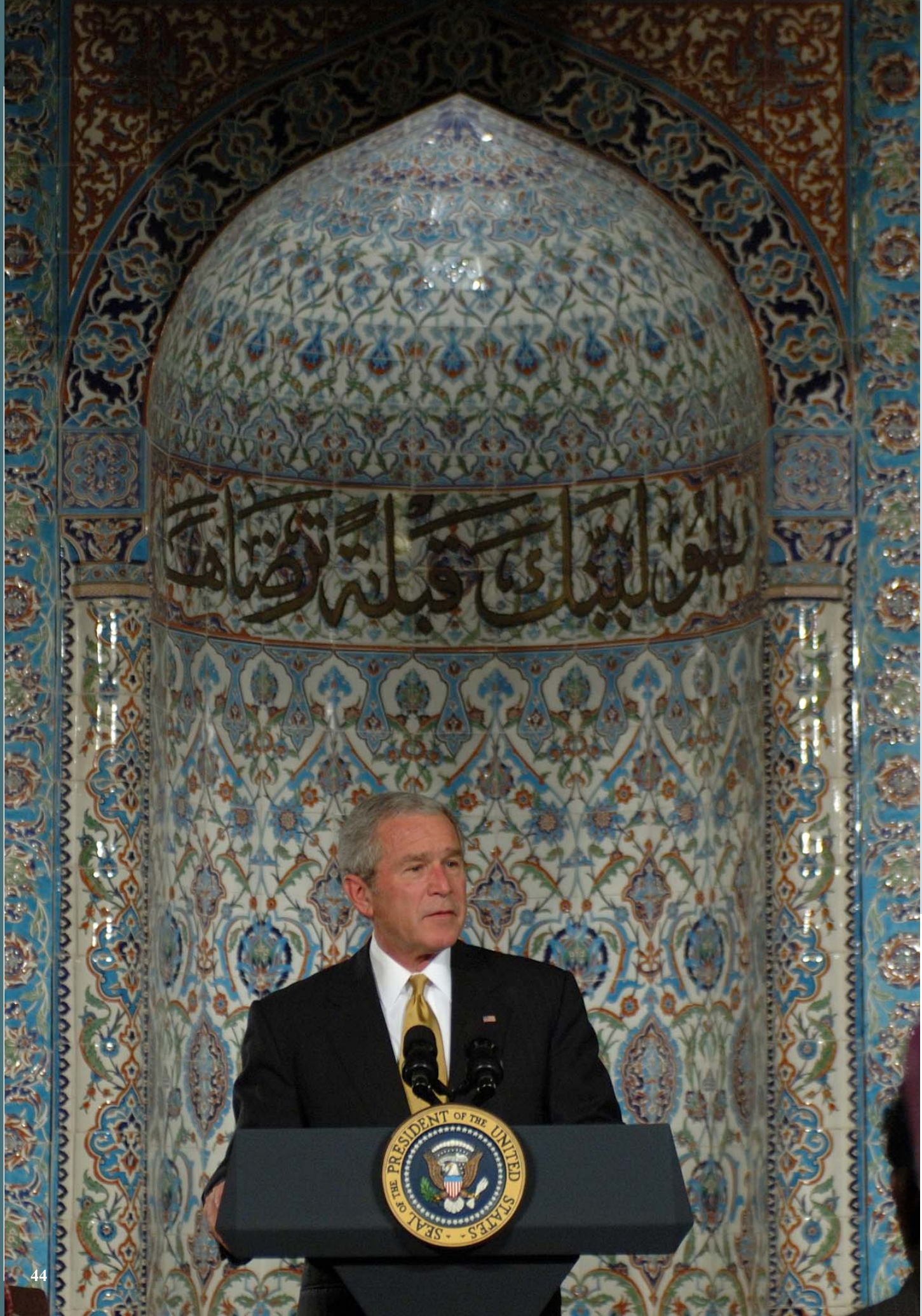

जेनीन माइड्स/ अमेरिकी विदेश विभाग

इस्लामिक सेंटर में राष्ट्रपति बुश के उद्गार

इमाम साहब, बहुत बहुत धन्यवाद। मुझे यहां आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद। श्रीमान, मैं आपके प्रति निजी आदर व्यक्त करता हूं। और मैं आपकी मित्रता की सराहना करता हूं। मैं इस्लामिक सेंटर के गवर्नरों का धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूं। मैं राजदूतों का स्वागत करता हूं। आप सभी का यहां आने के लिए धन्यवाद। यहां मौजूद अन्य विशिष्ट मेहमानों की भी मैं सराहना करता हूं। इस समारोह में आपके साथ होना मेरे लिए सम्मान की बात है।

जैसा कि इमाम साहब ने बताया, हमारे देश के एक महान नेता द्वारा इस्लामिक सेंटर का हमारे देश के धर्मों के समूह में स्वागत किया गया और ऐसा हुए आधी सदी बीत चुकी है। इस स्थल के उद्घाटन के अवसर पर राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइजनहावर ने दुनियाभर के मुस्लिमों की ओर अमेरिका का दोस्ती का हाथ बढ़ाया था। उन्होंने कहा था कि हम मिलकर खुद को ''एक ही ईश्वर के तहत सभी की शांतिपूर्ण प्रगति के लिए'' प्रतिबद्ध करें।

आज हम मित्रता और आदर के साथ, उसी शपथ में आस्था जताते हुए यहां एकत्र हुए हैं- और स्वतंत्रता और शांति के अभियान में इकट्ठे खड़े होने के अपने निश्चय को फिर से दोहराते हैं। हम उस धर्म के प्रति अपना आदर जताने के लिए आए हैं जिसने शताब्दियों तक सभ्यताओं को समृद्ध किया है। हम अमेरिका की धार्मिक विविधता और स्वतंत्र लोगों के रूप में हमारी एकता के प्रति खुशी जताने के लिए यहां आए हैं। और हमारे दिलों में महान मुस्लिम कवि रूमी की प्राचीन बुद्धिमता है: ''दिए अलग-अलग हैं लेकिन रोशनी एक है।''

इस पुनर्उद्घाटन समारोह जैसे क्षण स्पष्ट करते हैं कि अमेरिकी नागरिकों के रूप में हम क्या हैं और हम दुनिया के लिए क्या कामना करते हैं। हम ऐसे दौर में रह रहे हैं जब अमेरिका और उसके इरादों को लेकर सवाल खड़े किए जाते हैं। जो हमारे देश को सच्ची तरह से समझना चाहते हैं, उन्हें यहां से दूर जाने की ज़रूरत नहीं है। यह मुस्लिम सेंटर उसी सड़क पर है जहां यहूदी प्रार्थनाघर, लूथर चर्च, कैथोलिक गिरजा, यूनानी ऑर्थोडॉक्स प्रार्थनाघर और बौद्ध मंदिर हैं। इन सबके आस्थावान अनुयायी हैं और अपनी आस्था के अनुरुप धर्म का पालन करते हैं और शांतिपूर्वक साथ-साथ रहते हैं।

आज़ादी यही सब कुछ देती है: ऐसे समाज जहां लोग अपनी इच्छा के मुताबिक बिना किसी भय, बिना किसी संदेह, खुफिया पुलिस की दरवाजे पर दस्तक के बिना रह सकें और आराधना कर सकें।

अमेरिका के अधिकारों की सूची बिल ऑफ राइट्स में धार्मिक आज़ादी को सबसे पहला संरक्षण दिया गया है। यह बहुत मूल्यवान आज़ादी है। यह मूल अवधारणा है जिसके तहत धार्मिक लोग अपनी आध्यात्मिक दृष्टि दूसरों पर नहीं थोपने को सहमत होते हैं और बदले में अपने नज़रिये के मुताबिक अपनी आस्था का पालन करते हैं। हमारे संविधान का यह वादा है- और यह हमारे अंत:करण की आवाज और ताकत का स्रोत है।

आराधना की आजादी अमेरिका के चरित्र में इस तरीके से केंद्र में है कि जब दूसरे लोगों की आज़ादी पर आंच आती है तो हम इसे व्यक्तिगत तौर पर लेते हैं। सोवियत संघ में हमारा देश यहूदी रिफ्यूजनिकों की ओर से प्रमुख आवाज बना था। अमेरिकियों ने गुप्त रूप से छिपकर प्रार्थना करने वाले कैथोलिकों और प्रोटेंस्टेंट के साथ साझा संघर्ष में भागीदारी की। अमेरिका ने बर्मा और चीन जैसी जगहों पर अपने धर्म का आज़ादी के साथ पालन करने में मुस्लिमों का साथ दिया।

मुस्लिम धर्म के प्रति अपने घर में अमेरिका के आदर को रेखांकित करने के लिए मैं 11 सितंबर के हमले के छह दिन बाद इस सेंटर पर आया और मुस्लिम अमेरिकियों के प्रति पूर्वाग्रहों वाली घटनाओं की निंदा की। (तालियां।) आज मैं एक नई पहल कर रहा हूं जो अमेरिका और प्रमुख रूप से मुस्लिम आबादी वाले देशों के बीच आपसी समझ और सहयोग को और बढ़ाएगा।

मैं ऑर्गेनाइजेशन ऑफ द इस्लामिक कांफ्रेंस के

बाएं : 27 जून 2007 को वाशिंगटन डी.सी. में इस्लामिक सेंटर की 50वीं वर्षगांठ और इसके पुनर्उद्घाटन के मौके पर अपने उद्गार व्यक्त करते अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि अमेरिका ने पूरी दुनिया के मुसलमानों की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया है।

दाएं: वाशिंगटन डी.सी. स्थित इस्लामिक सेंटर का बाहरी दृश्य। 26 जनवरी 1957 को इस इस्लामिक सेंटर का उद्घाटन हुआ। इस वक्त इसमें तकरीबन 75 देशों के नमाजी आम दिनों के अलावा जुमे के दिन नमाज अदा करते हैं और उनकी तादाद तीन हज़ार से भी ज़्यादा होती है।

यूएसडीएसी

जेफ्रीन साइडस/अमेरिकी विदेश विभाग

"आज मैं एक नई पहल कर रहा हूं जो अमेरिका और प्रमुख रूप से मुस्लिम आबादी वाले देशों के बीच आपसी समझ और सहयोग को और बढ़ाएगा।"

लिए विशेष दूत नियुक्त करूंगा। यह पहली बार है कि कि राष्ट्रपति ओआईसी के लिए ऐसी नियुक्ति कर रहे हैं। (तालियां।) हमारा विशेष दूत मुस्लिम देशों के प्रतिनिधियों की बातों को सुनेगा, उन्हें समझेगा और उनके साथ अमेरिकी विचारों और मूल्यों को साझा करेगा। अमेरिकियों के लिए यह मुस्लिम समुदायों के साथ आदरपूर्वक बातचीत और सतत मित्रता में हमारी दिलचस्पी प्रकट करने का अवसर है।

हमने इस मित्रता को पूरी दुनिया में युद्ध और प्राकृतिक आपदा के समय मुस्लिम समुदायों को मिले भारी अमेरिकी समर्थन के रूप में देखा है। अमेरिकियों ने पाकिस्तान और ईरान में भीषण भूकंप के शिकार लोगों की मदद की और इंडोनेशिया और मलयेशिया में सुनामी की तबाही का जवाब तुरंत और सहानुभूति के आधार पर दिया। हमारे देश ने यूगोस्लाविया के टूटने पर बोस्निया और कोसोवो के मुस्लिमों की रक्षा की। (तालियां।) आज हम सूडान में नरसंहार के खिलाफ दुनिया को एकजुट कर रहे हैं। सभी धर्मों को मानने वाले अमेरिकियों ने दया, दृढ़ विश्वास और विवेक के आधार पर ये प्रयास किए हैं।

अपने विवेक के आधार पर काम करने वाले लोगों के सामने सबसे बड़ी चुनौती उग्रवाद के खिलाफ संघर्ष में, जैसा कि इस समय मध्य पूर्व में हो रहा है, मध्यमार्ग की ताकतों की मदद करना है। हमने दुनिया के हर हिस्से में धार्मिक आज़ादी और वैयक्तिक अधिकारों के विचारों का विस्तार देखा है- सिवाय एक जगह के। मध्य पूर्व में हमने उग्रवादियों के एक समूह को उभरते देखा है जो ताकत और प्रभाव बढ़ाने के लिए धर्म का इस्तेमाल करना चाहते हैं।

ये स्वयंभू नेता मुस्लिमों के हक में बोलने की बात कहते हैं, लेकिन वे ऐसा करते नहीं। जो मुस्लिम उनकी निष्ठुर और घृणित विचारधारा में विश्वास नहीं करते, उन्हें वे मुस्लिम धर्म के विश्वासघाती और काफिर कहते हैं। ये शत्रु झूठा दावा करते हैं कि अमेरिका मुस्लिमों और मुस्लिम धर्म के विरूद्ध युद्धरत है, जबकि वास्तविकता यह है कि ये अतिवादी इस्लाम के दुश्मन हैं। (तालियां।)

इन लोगों ने मुसलमानों के पवित्र स्थलों पर हमले किए हैं जिससे कि वे मुसलमानों को बांट सकें और उन्हें एक-दूसरे से लड़ा सकें। इन लोगों की आतंकी कार्रवाइयों के शिकार लोगों में बहुसंख्या मुसलमानों की है। अफगानिस्तान में इन लोगों ने अध्यापकों को पिटाई और हत्या के लिए निशाना बनाया है। इराक में इन्होंने एक लड़के को मार दिया और उसके शरीर में विस्फोटक भर दिए जिससे कि उसका परिवार उसे लेने आए तो उसमें विस्फोट हो जाए। वे कार की पिछली सीट पर बच्चों को बिठा देते हैं ताकि वे सुरक्षा जांच से गुजर सकें और फिर बच्चों सहित कार को उड़ा देते हैं। इन शत्रुओं ने अम्मान, जॉर्डन में शादी के एक रिसेप्शन में, सऊदी अरब में एक आवासीय परिसर में और जकार्ता में एक होटल में बमों से विस्फोट किए। ये लोग अल्लाह के नाम पर इस तरह की मारकाट और अंगभंग करने का दावा करते हैं। लेकिन ये शत्रु इस्लाम का वास्तविक चेहरा नहीं हैं। ये शत्रु घृणा का चेहरा हैं।

विवेकशील पुरुषों और महिलाओं का कर्तव्य है कि वे इस हत्यारे अभियान के खिलाफ बोलें और इसकी निंदा करें। हमें गौरवशाली और ऐतिहासिक मुस्लिम धर्म को इस्लाम के नाम पर हत्यारों और अंगभंग करने वाले लोगों से बचाने में करोड़ों मुसलमानों की मदद करनी चाहिए। और इस प्रयास में मध्यमार्गी मुस्लिम नेताओं की आवाज सबसे ताकतवर और प्रभावी है। हम उन मुस्लिमों की प्रशंसा और धन्यवाद ज्ञापित करते हैं जिन्होंने उन लोगों की निंदा की है जिन्हें ओआईसी के सेक्रेटेरी जनरल ने "इस्लाम के नाम पर कार्रवाई करने का बहाना करने वाले कुछ अतिवादी तत्व" बताया है। हमें और ज़्यादा मुस्लिम नेताओं को अपनी आवाज बुलंद करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। मस्जिदों में घुसपैठ करने वाले चरमपंथी उग्रवादियों के खिलाफ आवाज उठाएं, ऐसे संगठनों की निंदा करें जो इस्लाम का मुलम्मा चढ़ाकर हिंसा की गतितिविधियों के लिए समर्थन और धन जुटाते हैं। और युवा मुस्लिमों तक पहुंच बनाएं- हमारे अपने देश में भी और स्वतंत्र विश्व में अन्य जगहों पर- जो यह मानते हैं कि आत्मघाती बमबारी को किसी दिन जायज ठहराया जा सकता है।

हमें उन मुस्लिमों की आवाज को एकसाथ लाने की ज़रूरत है जो समृद्धि और स्वतंत्रता के विश्वव्यापी आंदोलन में पीछे छूट गए अरब देशों के करोड़ों लोगों से सीधी बात कर सकें। दशकों तक स्वतंत्र दुनिया ने मध्य पूर्व के मुस्लिमों को तानाशाहों, आतंकवादियों और निराशावाद के सहारे छोड़ दिया। शांति और स्थायित्व के मकसद से ऐसा किया गया। लेकिन इस नज़रिये से इनमें से कुछ भी नहीं मिला। मध्य-पूर्व आतंकवाद और निराशा को बढ़ावा देने की जगह बन गया और इसका नतीज़ा रहा पश्चिम के प्रति मुस्लिमों के मन में शत्रुता का भाव। मैंने अपने राष्ट्रपति कार्यकाल में मुस्लिमों को आतंकवाद के खिलाफ लड़ने, अपनी स्वतंत्रता हासिल करने और समृद्धि और शांति का अपना अनूठा रास्ता चुनने पर ध्यान दिया है।

अफगानिस्तान और इराक में चल रहे प्रयास इस मामले में केंद्र में हैं। लेकिन इस संघर्ष से खतरा खत्म नहीं होगा। यह यहीं खत्म नहीं होगा। हमें विश्वास है कि अफगानिस्तान और इराकियों की अंत में सफलता उन अन्य लोगों को भी प्रेरित करेगी जो आज़ादी के साथ रहना चाहते हैं। हम ऐसे दिन के लिए प्रयास करेंगे जब लोकतांत्रिक फिलिस्तीन और इस्राइल साथ-साथ शांति के साथ रह सकें। (तालियां।) हमने मध्य पूर्व के अन्य हिस्सों में लोकतांत्रिक भविष्य के लिए पहले ही हलचल देखी है, हालांकि स्वतंत्रता को खिलने में समय लगेगा। लोकतांत्रिक भविष्य पश्चिमी देशों द्वारा थोपी गई कोई योजना नहीं है। यह ऐसा भविष्य है जो क्षेत्र के लोग अपने लिए चुनेंगे। आज़ादी का भविष्य हर प्यार भरे दिल का सपना और इच्छा होती है।

हम इस बात को जानते हैं क्योंकि अफगानिस्तान में 80 लाख लोगों ने धमकियों और भय के बावजूद मतदान किया। हम यह बात जानते हैं क्योंकि इराक में स्वतंत्र चुनाव में 120 लाख लोगों ने वोट डाले। और हम इस बात को जानते हैं क्योंकि दुनिया ने लेबनान के लोगों को इंकलाब का बिगुल बजाते, सीरियाई हमलावरों को बाहर भगाते और स्वतंत्र चुनाव के जरिये नए नेताओं को चुनते देखा है। अब भी मध्य पूर्व के कई अंधेरे कोनों में आज़ादी की उम्मीद महसूस की जाती है- अपने घर में कुछ कानाफूसी, कॉफी हाउस में, कक्षाओं में। लाखों लोग ऐसा भविष्य चाहते हैं जहां वे वह कह सकें जो वे सोचते हैं, वहां सैर-सपाटा कर सकें जहां जाना चाहते हैं और अपने हिसाब से आराधना कर सकें। वे अपनी आज़ादी के लिए खामोशी से प्रार्थना करते हैं- और वे आशा करते हैं कि कोई, कहीं उनकी प्रार्थना का जवाब देगा।

इसलिए आज, इस स्वतंत्र धर्मस्थल पर, स्वतंत्र देश के केंद्र से हम दमिश्क से तेहरान तक आज़ादी चाहने वालों से कहते हैं: आपकी यह दुर्दशा हमेशा नहीं रहने वाली, आप खामोशी से अकेले और याचना नहीं करेंगे, स्वतंत्र विश्व आपकी आवाज सुन रहा है। आप अकेले नहीं हैं। अमेरिका आपकी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाता है। हम उस दिन के लिए प्रयास करेंगे जब आपका स्वतंत्र देशों के परिवार में स्वागत कर सकें। हम प्रार्थना करते हैं कि आप और आपके बच्चे एक दिन हर चीज़ में आज़ादी को महसूस करें, प्यार करने और ईश्वर की आराधना की आज़ादी सहित।

ईश्वर आप पर कृपा बनाए रखे।